बपतिस्मा ''कैसे?'' ''किसे?'' और ''ज़्यों?''

''और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:15, 16)।

यीशु के पीछे चलने का दावा करने वालों में बपतिस्मे के प्रति व्यवहार के कारण उन लोगों में फूट है। ''मसीही लोग आमतौर पर इस बात में एक होते हैं कि बपतिस्मे की आज्ञा दी गई है, परन्तु इस विषय के लगभग प्रत्येक पहलू पर वे बंटे हुए हैं।''[1] बपतिस्मे के तीन पहलू जिनसे यह तनाव उत्पन्न हुआ वे हैं बपतिस्मा कैसे दिया जाना चाहिए, किसे दिया जाना चाहिए और किस लिए दिया जाना चाहिए। आइए देखते हैं कि बाइबल इसके प्रत्येक पहलू के बारे में ज़्या कहती है।

बपतिस्मा कैसे दिया जाता था?

इस बात से लगभग हर कोई सहमत होगा कि डुबकी से बपतिस्मा परमेश्वर को स्वीकार्य है, पर विवाद इस बात पर होता है कि परमेश्वर डुबकी के बजाय छिड़काव से या पानी उंडेलकर दिए गए बपतिस्मे को स्वीकार करेगा या नहीं।

परमेश्वर से जुड़े सभी मामलों में हमें एक निश्चित ढंग ही अपनाना चाहिए। संदर्भ के उपयोग में ''बपतिस्मा'' शब्द डुबकी का संकेत देता है, न कि छिड़काव या उंडेलने का।

आधुनिक सांसारिक (अर्थात सेकुलर) शब्दकोषों में बपतिस्मे का अर्थ ''छिड़काव, उंडेलना या डुबोना'' दिया जाता है, परन्तु व्युत्पत्ति (शब्द के ऐतिहासिक विकास) के बारे में बताते हुए उनमें लिखा जाता है कि यूनानी शब्द जिससे ''बपतिस्मा देना'' का विकास हुआ, का अर्थ ''डुबोना'' ही था:

> *द अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी:* ''baptize'' (अर्थात बपतिस्मा देना) ''यूनानी शब्द baptein (अर्थात डुबोना)'' से लिया गया है।[2]

> *द एंकर बाइबल डिक्शनरी:* '''baptize,' *baptizein* के लिए यूनानी क्रिया *baptein*, '*dip*' से बना है और इसका अर्थ 'बार-बार या पूरी तरह भिगोना अर्थात डुबोना' है।''[3]

ओरिजिन्स, ए शॉर्ट एटाइमोलोजिकल डिज़्शनरी ऑफ़ मॉडर्न इंग्लिश: ''मान्य मूल यू baptein के सुधरे रूप baptizein ... जल में डुबोना में मिलता है।''[4]

अन्य सभी बड़े शज्दकोश ''डुबोना'' की परिभाषा से सहमत हैं।

इसके अतिरिज़्त हम पढ़ते हैं, ''बपतिस्मे का मूल ढंग पूरे शरीर को पानी में डुबोने से होता था, पर दूसरी शताज़्दी से effusion [अर्थात उंडेलने] का ढंग अधिक प्रसिद्ध है''[5]; ''जैसा कि प्राचीन बेपटिज़रियों (बपतिस्मा देने की टंकियों) से पता चलता है, प्राचीन समयों में बपतिस्मे का प्रचलित ढंग डुबोना ही था।''[6]

इस ढंग का उद्देश्य स्पष्ट है। एंडर्स नाइग्रम लिखता है, ''बपतिस्मा लेने वाले को पानी में डुबोया जाने का कार्य 'मसीह के साथ गाड़े जाने' का संकेत देता है; और उस व्यज़्ति का जल से बाहर निकलना 'मसीह के साथ' जी उठने का संकेत देता है।''[7]

रोमियों 6:4 के सज़्बन्ध में, एवरेट एफ़. हैरिसन का कहना है, ''स्पष्टतया, [पौलुस] बपतिस्मे के पानी के नीचे देह के डुबोए जाने में, चाहे क्षणिक ही है, मसीह के साथ गाड़े जाने की तस्वीर बनाता है।''[8]

जे. बी. लाइटफुट ने टिप्पणी की थी, ''जैसे प्रो. [बी.] जोवेट ने सही अवलोकन किया है, प्रेरित बपतिस्मे के स्वरूप को याद करने के लिए 'मारे गए' के बजाय 'गाड़े गए' वाज़्यांश का परिचय देता है, जो ऐसा समानांतर है कि छिड़काव से बपतिस्मे की हमारी वर्तमान रीति में नहीं मिलता।''[9]

मार्टिन लूथर ने लिखा है, ''बपतिस्मा एक यूनानी शज़्द है; लातीनी में इसे MERSIO कहा जा सकता है: जब हम किसी वस्तु को पानी में डुबोते हैं, जिससे वह पूरी तरह पानी में डूब सके। यद्यपि यह रीति अधिकांश लोगों में खत्म हो गई है, (ज़्योंकि वे बच्चों को पूरी तरह डुबोते ही नहीं, उन पर केवल थोड़ा सा जल छिड़कते हैं), तो भी उन्हें पूरी तरह से डुबोए जाकर तुरन्त बाहर निकलने की इच्छा करनी चाहिए, ज़्योंकि शज़्द की व्युत्पज़ि यही मांग करती लगती है।''[10]

इसके अलावा, बाइबल में वह संदर्भ जहां ''बपतिस्मा'' शज़्द आता है, संकेत देता है कि इसका अर्थ ''डुबोना'' है:

> उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उस ने आकाश को खुलते ... देखा (मरकुस 1:9, 10)।
>
> और यूहन्ना भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था। ज़्योंकि वहां बहुत जल था ... (यूहन्ना 3:23क)।
>
> ... और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, ... (प्रेरितों 8:38, 39)।

सो उस मृत्यु का (अर्थात में) बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए (रोमियों 6:4क)।

उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और ... उसके साथ जी भी उठे (कुलुस्सियों 2:12)।

बपतिस्मा किसे दिया जाता था?

बपतिस्मा उन पुरुषों व स्त्रियों को दिया जाता था जो अपने जीवन यीशु को देने का निर्णय लेने के योग्य होते थे। बपतिस्मे के लिए यह और अन्य शर्तें संकेत देती हैं कि बपतिस्मा उन लोगों के लिए है जो इतने बड़े हों कि इस बात को समझ सकें कि वे ज़्या कर रहे हैं।

बाइबल कहती है कि बपतिस्मा लेने वालों ने (1) सुसमाचार सुना हो (मरकुस 16:15), (2) सुसमाचार पर विश्वास करते हों (मरकुस 16:16), (3) मन फिराया हो (प्रेरितों 2:38)। उन पुरुषों व स्त्रियों ने बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 8:12) जिनके बारे में कहा गया था कि उन्होंने (1) वचन सुना (प्रेरितों 8:12; 18:8) और (2) सुना हुआ संदेश ग्रहण करके उस पर विश्वास किया था (प्रेरितों 2:41; 8:12; 16:33, 34; 18:8)। ये वे लोग थे जो परमेश्वर के काम में अपने विश्वास के कारण (कुलुस्सियों 2:12), हृदय से मानकर (रोमियों 6:17, 18) यीशु के पीछे चलने के लिए समर्पित एक नया जीवन आरज़्भ करने के लिए पुराने जीवन को त्याग देते थे (रोमियों 6:4-7)।

नवजात बच्चे बपतिस्मे से जुड़े आत्मिक अर्थों को नहीं समझ सकते और न ही बपतिस्मे के लिए महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता दिखा सकते हैं। बपतिस्मा तो उनके लिए है जिन्हें सिखाया गया हो, जो यीशु में विश्वास लाए हों और उन्होंने यीशु की सेवा के लिए अपने जीवन देने का निर्णय किया हो।

स्वर्ग का राज्य छोटे बच्चों जैसे लोगों का है (मत्ती 19:14)। वे आदम के पाप को लेकर पैदा नहीं हुए अर्थात वे जन्म से पापी नहीं थे, न ही वे प्रकृति में किसी प्रकार विकृत रूप से पैदा हुए थे जैसा कि कुछ लोग सिखाते हैं।

परमेश्वर ने यह *नहीं* कहा कि आदम और हव्वा के भले और बुरे के ज्ञान का फल खाने के बाद मनुष्य विकृत हो गया था। बल्कि उसने कहा कि, ''मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है'' (उत्पत्ति 3:22क)। उनके लिए और उनके बाद की सभी पीढ़ियों के लिए दण्ड जीवन के वृक्ष से दूर रहना था। हम सब की आदम में शारीरिक मृत्यु होती है (1 कुरिन्थियों 15:22); परन्तु आदम के किए हुए कामों के आधार पर नहीं, बल्कि आत्मिक तौर पर हम में से हर एक अपनी ही आत्मिक स्थिति के लिए ज़िम्मेदार है। हमारा न्याय इस आधार पर होगा कि अपने शरीर में रहते हुए हमने ज़्या किया है (2 कुरिन्थियों 5:10), न कि इस आधार पर कि आदम ने ज़्या किया था।[11]

बपतिस्मे का उद्देश्य ज़्या था?

यूहन्ना का बपतिस्मा एवं क्षमा

यूहन्ना का उद्देश्य आने वाले मसीहा के लिए लोगों को तैयार करना था (मत्ती 3:3)।

उसने लोगों को न केवल प्रचार से ही बल्कि उन्हें बपतिस्मे तक लाकर भी तैयार किया। उसने उन्हें यह समझने में सहायता की कि चेले बनने के लिए प्रतिबद्धता आवश्यक है।

उसने उन्हें पापों की क्षमा पाने के लिए मन से बपतिस्मे को आवश्यक मानने के लिए तैयार किया था। मरकुस 1:4 और लूका 3:3 कहते हैं कि यूहन्ना ''पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे का'' प्रचार करता था। यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले लोग पापों को मानकर (मत्ती 3:6) क्षमा चाहते थे।

''पापों की क्षमा के लिए''

यीशु के नाम में क्षमा की शिक्षा सबसे पहले यरूशलेम में यीशु की मृत्यु और उसके जी उठने के बाद दी जाने लगी (लूका 24:46, 47)। पहले क्षमा का उल्लेख तो हुआ है, परन्तु उसके नाम में क्षमा का नहीं। यीशु के नाम में क्षमा का प्रचार पतरस ने सबसे पहले किया था। उसने इस तथ्य से कि उन्होंने प्रभु और मसीह को क्रूस पर चढ़ाया है, परेशान लोगों से कहा था, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38क; अंग्रेज़ी बाइबल)। यह संदेश जिसका उसने यरूशलेम में प्रचार किया था अब सब जातियों के लिए है (लूका 24:47)।

''पापों की क्षमा के निमित्त'' या ''पापों की क्षमा के लिए'' वाक्यांश मत्ती 26:28, मरकुस 1:4, और लूका 3:3; 24:47 में मिलते हैं। कोई गंभीर विश्वासी यह नहीं कहेगा कि यीशु का लहू इसलिए बहा क्योंकि हमारे पाप पहले ही क्षमा हो गए थे (मत्ती 26:28) या हमें इसलिए मन फिराना चाहिए क्योंकि हमारे पाप क्षमा हो चुके हैं (लूका 24:47)। फिर कोई इस बात का दावा क्यों करता है कि प्रेरितों 2:38 में इसी वाक्यांश का अर्थ ''कि तुम्हारे पाप क्षमा किए जाएं'' से अलग है? कुछ हस्तलिपियों में लूका 24:47 में ''पापों की क्षमा के लिए'' की जगह ''और पापों की क्षमा'' मिलता है। परन्तु ''and'' (और) (यू.: *kai*) को अब ''for'' (के लिए) (यू.: *eis*) से कम अधिकार रखने वाला माना जाने लगा है, जैसा कि यूनाइटेड बाइबल सोसाइटियों और *नैसले-ऐलंड ग्रीक टैक्सट* के सबसे नये संस्करण में बताया गया है।[12]

प्रेरितों 2:38 में मन फिराव और बपतिस्मे को ''और'' (या एण्ड) से मिलाने पर दोनों का एक ही उद्देश्य मिलता है, ''पापों की क्षमा।'' कुछ लोगों द्वारा पतरस के वाक्य पर विवाद करने का मुख्य कारण यह है कि वे यह विश्वास नहीं करना चाहते कि उद्धार के लिए बपतिस्मा ज़रूरी है। पवित्र शास्त्र के इस भाग में *eis* को समझने का सबसे स्वाभाविक ढंग इसका अर्थ ''पाने के लिए'' समझना है जैसा कि नये नियम में अन्य संदर्भों में इसका अनुवाद होता है।

''क्षमा के लिए'' वाक्यांश में ''के लिए'' (जैसा कि मत्ती 26:28; मरकुस 1:4; लूका 3:3; 24:47; प्रेरितों 2:38 में मिलता है) की जगह यूनानी शब्द *eis* है। जे. बी. लाइटफुट ने रोमियों 6:3 में *eis* के सम्बन्ध में लिखा है, ''पूर्वसर्ग में, में समावेश का बोध है''; आगे उसने लिखा, ''... मरकुस 1:4 में *eis aphesin harmartion* [अर्थात

''पापों की क्षमा के लिए''] उपसर्ग के अर्थ में ... बपतिस्मे का उद्देश्य और परिणाम का संकेत है।''[13]

चार्ल्स हॉज लिखता है कि मरकुस 1:4 में *eis* का अर्थ है ''कि पापों की क्षमा पाई जा सके।''[14]

डगलस मू ने लिखा है, ''नये नियम में *बेपटिज़ो* के बाद *eis* केवल स्थानीय/भौतिक अर्थ (मरकुस 1:9 ['यरदन में']) या उद्देश्य/परिणाम का संकेत (मत्ती 3:11 और प्रेरितों 2:38 ['पापों की क्षमा']) का एकमात्र हवाला है ; ...''[15]

कुछ लोगों का कहना है कि बपतिस्मा लेने वाले के लिए बपतिस्मे के उद्देश्य को समझना ज़रूरी नहीं है। उनका कहना है कि यदि किसी को परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए बपतिस्मा दिया जाता, चाहे उसे बपतिस्मे के उद्देश्य की समझ हो या न, तो उसे क्षमा मिल जाएगी। सुझाव दिया जाता है कि क्षमा करना तो परमेश्वर का काम है और बपतिस्मा लेना मनुष्य का कर्ज़व्य। यह विचार इस तथ्य की उपेक्षा करता है कि बपतिस्मे का उद्देश्य मनुष्य का कर्ज़व्य भी है।

यदि किसी ने अपनी पत्नी को गुस्सा दिलाया हो और पत्नी ने कहा हो, ''मैं तुझ्हें क्षमा कर दूंगी यदि तुम मुझे एक दर्जन लाल गुलाब लाकर दोगे,'' तो वह उसे गुलाब दे सकता है *ताकि* उसे क्षमा मिल जाए। वह ऐसा क्षमा पाने के *लिए, इच्छा या उद्देश्य से* करेगा। क्षमा देने वाली तो पत्नी होगी, परन्तु पति को क्षमा पाने के लिए उसे गुलाब देना आवश्यक होगा।

आपज़ि की जाती है कि यदि यह समझना आवश्यक नहीं है कि बपतिस्मे के समय पवित्र आत्मा दिया जाएगा, तो बपतिस्मे के उद्देश्य के रूप में पापों की क्षमा को समझने की भी आवश्यकता नहीं है। बपतिस्मा तो पापों की क्षमा के उद्देश्य को पूरा करने के लिए है। पवित्र आत्मा उन्हें दिया जाता है जिन्हें बपतिस्मा लेने से क्षमा मिल जाती है। ज़्योंकि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए है, इसलिए हमें अपने बपतिस्मे के उद्देश्य को समझना ज़रूरी है। इसके विपरीत पवित्र आत्मा के दान को समझने की आवश्यकता नहीं है, ज़्योंकि बपतिस्मा पवित्र आत्मा पाने *के लिए* नहीं होता।

गुस्सा होने वाली पत्नी कह सकती है, ''क्षमा चाहिए तो मुझे एक दर्जन गुलाब लाकर दो और मैं तुझ्हें एक चुज़्बन दूंगी।'' उसका पति क्षमा पाने के लिए और फिर क्षमा के साथ चुज़्बन मिलने के कारण उसे गुलाब लाकर दे सकता है। पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है; फिर क्षमा पा लेने के कारण हमें पवित्र आत्मा मिलता है।

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने यहूदियों को मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए कहा था ताकि उनके पाप क्षमा किए जाएं, और उसके बाद उन्हें दान के रूप में पवित्र आत्मा मिल सके।

यीशु का बपतिस्मा

कुछ लोग सिखाते हैं कि हमारा आदर्श यीशु बपतिस्मा लेने के समय पाप रहित था, जिसका अर्थ है कि हमें भी बपतिस्मा लेने के समय पहले ही क्षमा पाए हुए और पाप रहित होना चाहिए।

यीशु इस बात में हमारा उदाहरण है कि हम अपनी दौड़ में उस पर नज़रें टिकाकर दौड़ें (इब्रानियों 12:2)। हमें वैसे ही चलना है जैसे वह चलता था, वैसा ही आचरण करना है जैसा उसका था, और पौलुस का अनुसरण करना है जैसे वह मसीह का अनुसरण करता था (1 यूहन्ना 2:6; फिलिप्पियों 2:5; 1 कुरिन्थियों 11:1)। पतरस लिखता है कि यीशु धर्म के लिए दुख उठाने में हमारा उदाहरण है (1 पतरस 2:21)। जैसे यीशु ने अपना जीवन दिया, वैसे ही हमें भी अपने भाइयों के लिए अपना जीवन दे देना चाहिए (1 यूहन्ना 3:16)।

ज़्या यीशु के हमारा आदर्श या उदाहरण होने का अर्थ यह है कि हमें वह सब कुछ करना चाहिए जो उसने किया, और उसी उद्देश्य के लिए करना चाहिए जिस उद्देश्य के लिए उसने किया? उसके उदाहरण के अनुसार चलने के लिए हमारे प्रयास में नीचे दिए गए सिद्धांतों से हमें अगुआई मिल सकती है।

पहला, कुछ बातें जो यीशु ने कीं, वे आकस्मिक थीं और ज़रूरी नहीं कि हम उसी नमूने के अनुसार चलें। उसने विवाह नहीं किया। उसकी कोई संतान या घर नहीं था (लूका 9:58)। उसने तीस वर्ष की आयु में बपतिस्मा लिया था और अपनी सेवकाई आरज़्भ की थी, और उसने अपने प्रतिनिधि होने के लिए बारह प्रेरितों को चुना था (लूका 3:21-24; 6:13)। वह दूसरों से आर्थिक सहायता इसलिए लेता था ताकि वह अपना समय सिखाने में लगा सके (लूका 8:3)।

दूसरा, कुछ बातें जो उसने कीं, वे सिद्धांत के लिए तो हमारा उदाहरण हैं, परन्तु हमारे लिए उन्हें पूरा करने की आवश्यकता नहीं है। उसका व्यवस्था के अनुसार खतना हुआ था (लूका 2:21), परन्तु हमें खतना करवाने की आवश्यकता नहीं है (गलातियों 6:15)। बपतिस्मा लेने के बाद उसने चालीस दिन तक उपवास रखा; फिर अपनी सेवकाई आरज़्भ की (मत्ती 4:2)। वह सब्त के दिन आराधनालयों में प्रचार करता (लूका 4:16, 31, 44; 6:6), फसह के पर्व को मानता (लूका 22:15, 16) और यहूदी लोगों को पशुओं के बलिदान भेंट करने और पुराने नियम की आज्ञाओं को मानने के लिए कहता था (मत्ती 19:17; लूका 5:14; 17:14)। वह व्यवस्था को पूरा करता था, जिसके अधीन वह पैदा हुआ था जो कि परमेश्वर की इच्छा को मानने के लिए हमारे लिए एक उदाहरण है (गलतियों 4:4)। यीशु इन सभी बातों को पूरा करता था, परन्तु आज ये हम पर लागू नहीं हैं (गलातियों 3:24, 25; इब्रानियों 7:12, 19; 10:9)।

तीसरा, कुछ बातें जो उसने कीं, हमें उन्हें सिद्धांत रूप में मानना चाहिए परन्तु उसी रूप में नहीं। यीशु ने उस सिक्के से जो पतरस ने मछली के मुंह से निकाला था, कर चुकाया (मत्ती 17:24-27)। हमें भी कर देना चाहिए (रोमियों 13:6), परन्तु मछली के मुंह से निकलने वाले धन से नहीं। उसने विनम्र सेवा का नमूना पेश करते हुए अपने चेलों के पांव धोए (यूहन्ना 13:5-15), जो कि उसके चेलों ने सिद्धांत रूप में अपनाना था न कि पांव धोने की रस्म बनाकर।

चौथा, कुछ बातें उसने हमारे मानने के लिए कीं परन्तु उनका उद्देश्य अलग था। यीशु ने एक नमूना देने के लिए प्रभु भोज लिया, परन्तु अपनी याद के उद्देश्य से नहीं

(1 कुरिन्थियों 11:23-25)। उसने दिखाया कि हमें अपने जीवन दूसरों के लिए देने चाहिए (1 पतरस 2:21; 1 यूहन्ना 3:16)। हम दूसरों के लिए मर सकते हैं, परन्तु उसी उद्देश्य के लिए नहीं जिसके लिए यीशु ने अपना लहू बहाया (मत्ती 26:28)।

हमारे लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है, परन्तु उसी उद्देश्य के लिए नहीं जिसके लिए यीशु ने लिया था। उसने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था। यूहन्ना ने पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार किया (मरकुस 1:4; लूका 3:3)। बपतिस्मा लेने वाले लोग अपने पापों का अंगीकार करते हुए आते थे (मत्ती 3:6), जो कि एक संकेत था कि वे उस क्षमा को चाहते थे जिसका प्रचार यूहन्ना कर रहा था। यीशु ने यूहन्ना का बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले दूसरे लोगों की तरह पापों की क्षमा के लिए एक पश्चात्तापी पापी की तरह बपतिस्मा नहीं लिया था।

बपतिस्मे के लिए यीशु हमारा वास्तविक उदाहरण नहीं हो सकता था, क्योंकि उसने पाप नहीं किया था; इसलिए वह अपने पापों से मन नहीं फिरा सकता था। यीशु ने सारी धार्मिकता को पूरा करने के लिए बपतिस्मा लिया था पापों की क्षमा के लिए नहीं बल्कि जो बपतिस्मा यीशु ने लिया था वह हमारे लिए नहीं था। उसने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था। आज यदि हम यीशु की तरह यूहन्ना का बपतिस्मा लेते हैं, तो हमें दोबारा बपतिस्मा लेना पड़ेगा (देखें प्रेरितों 19:1-5)।

यीशु ने ''सब धार्मिकता को पूरा करने'' के लिए बपतिस्मा लिया था (मत्ती 3:15)। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए केवल उसे ही बपतिस्मा दिया जा सकता है। वह अपने बपतिस्मे के उद्देश्य को समझता है जैसे हमें भी अपने बपतिस्मे के उद्देश्य की समझ होनी आवश्यक है। उसका बपतिस्मा हमारे लिए एक उदाहरण है, परन्तु यह इस बात का उदाहरण नहीं है कि हमें बपतिस्मा क्यों लेना चाहिए। उसने केवल धार्मिकता के ही काम किए थे और कोई पाप नहीं किया था, इसलिए वह सब धार्मिकता को पूरा करने के लिए बपतिस्मा ले सकता था। उसके विपरीत, हम तो पापी हैं जिन्हें धर्मी बनने के लिए बपतिस्मा लेना है। यीशु कुछ बातों में हमारा उदाहरण है कि हमें बपतिस्मे के लिए *क्या* करना चाहिए, परन्तु इस बात में वह हमारा उदाहरण नहीं है कि हमें बपतिस्मा *क्यों* लेना चाहिए।

पांचवां, कुछ बातों में यीशु सिद्धांत में लाने और उद्देश्य में हमारा उदाहरण है। उदाहरण के लिए, प्रेम, सेवा और अपने आपको देने के उसके उदाहरणों पर विचार करें (रोमियों 15:2, 3क)। इस तरह से हमें पूरी तरह से उसका अनुसरण करना है।

सारांश

हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि बपतिस्मे का उद्देश्य पापों की क्षमा पाना है। यीशु ने इसकी आज्ञा दी; पतरस और अन्य प्रेरितों ने इसका प्रचार किया; हमें इसकी आज्ञा मानने के लिए कहा गया है।

बपतिस्मे को इस प्रकार से संक्षिप्त किया गया है: '' बपतिस्मा प्रारम्भिक मसीहियों द्वारा पूरा माना जाने वाला सबसे नाटकीय संस्कारों में से एक था। इसका उद्देश्य पाप से पैदा हुई

सारी गंदगी को धोकर, उसके नये जीवन के लिए आरज़्भ करने की तैयारी होता था। बुनियादी रूप में, इस समारोह को बपतिस्मा लेने वाले द्वारा विश्वास का अंगीकार करना कहा जाता है, जिसके बाद यीशु मसीह के नाम में पानी में पूरी तरह से डुबोया जाना होता था।''[16]

पाद टिप्पणियां

[1]हैरल्ड लिंडसेल, सं. हारपर स्टडी बाइबल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोंडर्वन, 1965), 1491, n28.19a. [2]*द अमेरिकन हैरिटेज डिज़्शनरी,* 3रा संस्क., s.v. ''बेपटाइज़।'' [3]डेविड नोयल फ्रीडमैन, *द एंकर बाइबल डिज़्शनरी* (न्यूयॉर्क: डबलडे, 1992), 583. [4]*ओरिजिन्स, ए शॉर्ट इटाइमोलोजिकल डिज़्शनरी ऑफ़ मॉडर्न इंग्लिश* (लंदन: रूटलेज एण्ड केगन पॉल, 1959), 38. [5]मैसी एच. शैफर्ड जूनियर, *इन्साइज़्लोपीडिया इन्टरनेशनल* (डैनबरी, Conn.: लैज़िसकन पज़्लिकेशंस, 1981), 378. [6]रॉबर्ट सिसिलक मोरटाइमर, *चैज़्बर'स इन्साइज़्लोपीडिया,* अंक 2, संशो.: (लंदन: परगमॉन प्रैस, 1967),112. [7]ऐन्डर्स नाइग्रेन, *कमैन्ट्री ऑन रोमन्स,* अनु. कार्ल सी. रसमूसेन (फिलाडैल्फिया: मुहलनबर्ग प्रैस, 1949), 233. [8]ऐवरट एफ़. हैरिसन, *द एज़्सपोज़िटर'स बाइबल कमैन्ट्री,* अंक 10, *रोमन्स-गलेशियन्स,* सामा. संस्क. फ्रैंक ई. गेबलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोंडर्वन, 1976), 69. [9]जे. बी. लाइटफुट, *नोट्स ऑन एपिस्टल्स ऑफ़ सेंट पॉल: 1-2 थिस्सलुनीकियों, 1 कुरिन्थियों 1-7, रोमन्स 1-7, इफिशियन्स 1:1-14,* थॉर्नएप्पल कमैन्ट्रीज़, सं. जे. आर. हारमर (मैकमिलन एण्ड कं., 1895; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स मिशी.: बेकर बुक हाउस,1980), 296. [10]मार्टिन लूथर *ओपेरा* 1.72.

[11]यदि आदम और हव्वा आत्मिक और नैतिक रूप से भ्रष्ट हो चुके होते, तो वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने के बाद नैतिक ढंग से व्यवहार करने की इच्छा न करते। उनके अपने आपको ढांपने की इच्छा (उत्पज़ि 3:7) को निषेधित वृक्ष के फल से खाने के परिणाम से मिली नई समझ के आधार पर नैतिक रूप से कार्य करने के एक प्रयास के रूप में देखना चाहिए। [12]द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट, यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज़, चौथा संस्क. नैसले-ऐलंड ग्रीक टैज़्सट, 26वां संस्क. [13]लाइटफुट, 295-96. [14]चार्ल्स हॉज, *कमैन्ट्री ऑन द एपिस्टल टू रोमन्स* (प्रिंसटन: पृ. न., 1886; ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं. 1974), 193. [15]डगलस जे. मू, *द एपिस्टल टू द रोमन्स,* द न्यू इन्टरनेशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट, सामा. संस्क. नैड बी. स्टोनहाउस, एफ़ एफ़ ब्रूस, और गौर्डन डी. फी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं. 1996), 360, n42. [16]गेयला विसाली, सं., *आज़्टर जीज़स: द ट्रायज़्फ ऑफ़ क्रिश्चियनिटी* (न्यू यॉर्क: रीडर'स डायजेस्ट, पृ. न.), 36.